ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

139

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

सबलोग

मई-जून 2025 (संयुक्तांक) • ₹ 50

ग्रामीण विकास में नये प्रयोग

- साहित्य में अश्लीलता परोसने की विकृति
- बलूचिस्तान में आजादी का संघर्ष
- पश्चिम बंगाल, कॉंग्रेस और मुसलमान बुद्धिजीवी

तरुण भारत संघ और चम्बल का पुनरुद्धार

पुनीत कुमार

1990 के दशक में तरुण भारत संघ ने चम्बल क्षेत्र में जल संरक्षण का कार्य करना शुरू किया। यह विकेन्द्रीकृत समुदाय-संचालित प्रयास, स्वदेशी वर्षा जल संचयन तकनीकों पर आधारित प्राकृतिक समाधानों का पक्षधर था, जिसने खुद को राज्य और बाजार की ताकतों पर निर्भरता से अपने को दूर रखा। स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल का उपयोग करते हुए, समुदायों ने लगभग 1,000 पारम्परिक जल संरचनाओं जैसे कि जोहड़ (मिट्टी के जलाशय), पोखर (तालाब), एनीकट आदि का डिजाइन और निर्माण किया, जिससे बीहड़ों के पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने में परिवर्तनकारी बदलाव आये।

लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के शोधार्थी हैं।
+91 76783 67468
puneet.kumar@anu.edu.in

अलवर के थानागाजी तहसील के भीकमपुरा गाँव में स्थित तरुण भारत संघ (तरुण भारत संघ) पिछले 50 वर्षों से स्थानीय समुदाय के पारम्परिक ज्ञान और अभ्यास से विकेन्द्रीकृत जल प्रबन्धन द्वारा मृत नदियों को पुनर्जीवित करने का अतुलनीय काम कर रहा है। तरुण भारत संघ ने राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश समेत देश के अन्य कई राज्यों में लोकविद्या से जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उन्मूलन के स्थानीय समाधानों के काम का दर्शन दिया है।

यह कहानी है राजस्थान के करौली जिले के स्थानीय समुदायों की (जैसे गुज्जर, मीणा आदि) जिन्होंने तरुण भारत संघ के संस्थापक और भारत के जलपुरुष डॉ. राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में, चम्बल नदी की 23 छोटी सहायक नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए अपने विकास के पथ की कमान खुद सँभाली। पानी के अभाव में चम्बल के बीहड़ों में रहने वाले लोगों की खेती पर जब संकट आया तो उन्होंने आमदनी के लिए खनन का कार्य करना शुरू कर दिया। खनन कार्य करने से जो उपजाऊ मिट्टी थी वह भी अनुपजाऊ हो गयी। खनन कार्य करने के लिए विस्फोट करना पड़ता था, जिससे धरती के गर्भ में हजारों फीट गहराई तक बड़ी-बड़ी दरारें हो गयीं, और जिससे हजार फीट नीचे तक भी पानी नहीं रहा। खनन कार्य करने से यहाँ के लोगों में सिलिकोसिस की बीमारी भी होने लगी, जिससे उनका कमाया हुआ पैसा बीमारी में चला जाता था। धीरे-धीरे लोग कर्ज का शिकार हो गये। कुछ समय तक लोगों ने जंगल को काटकर लकड़ी बेचने का काम भी किया, जिससे जंगल बर्बाद हो गये और पशुपालन कमजोर होता चला गया। इस क्षेत्र के लोग पढ़े-लिखे भी नहीं थे, इसलिए कमाने के लिए बाहर जाने में भी अक्षम थे। लाचार होकर ये लोग बीहड़ों का सहारा लेकर आपराधिक-वृत्ति करने लगे। एक समय पूरे क्षेत्र में लूटपाट और चोरी-डकैती करना मुख्य व्यवसाय बन गया था। इस प्रकार यह पूरा क्षेत्र अशान्ति और भय के माहौल में ढल गया था। इनके डर से सामान्य लोग रोजगार के लिए इधर-उधर आने-जाने से भी डरने लगे। बेरोजगार, भय और अशान्ति के कारण यहाँ के युवाओं की शादी भी नहीं हो पाती थी। इसलिए इस क्षेत्र में लिंगानुपात भी असन्तुलित होता चला गया।

1990 के दशक में तरुण भारत संघ ने चम्बल क्षेत्र में जल संरक्षण का कार्य करना शुरू किया। यह विकेन्द्रीकृत समुदाय-संचालित प्रयास, स्वदेशी वर्षा जल संचयन तकनीकों पर आधारित प्राकृतिक समाधानों का पक्षधर था, जिसने खुद को राज्य और बाजार की ताकतों पर निर्भरता से अपने को दूर रखा। स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल का उपयोग करते हुए, समुदायों ने लगभग 1,000 पारम्परिक जल संरचनाओं

जैसे कि जोहड़ (मिट्टी के जलाशय), पोखर (तालाब), एनीकट आदि का डिजाइन और निर्माण किया, जिससे बीहड़ों के पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने में परिवर्तनकारी बदलाव आए।

23 सहायक नदियों में से तरुण भारत संघ ने 6 नदियों, नहरों, शेरनी, बढ़े, खर्रा वाई, गोडर और तेवर को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया है, जबकि अन्य के जीर्णोद्धार पर काम जारी है। इस सामूहिक और विकेन्द्रित प्रयास की सफलता का मुख्य तत्त्व वह तरीका था जिसमें समुदायों और गैर-सरकारी संगठनों ने अपने श्रम को नकद और वस्तु दोनों रूप में साझा किया। जहाँ संगठन ने लागत का दो-तिहाई योगदान दिया, वहीं गाँधी के विचार से प्रेरित लोगों ने अपने श्रमदान से इस मुहिम को बल प्रदान किया। मजबूरन पलायन के कारण वयस्क पुरुष श्रमिकों की अनुपस्थिति में प्रमुख हितधारक होने के नाते, महिलाएँ और बुजुर्ग सदस्यों ने पारिस्थितिक परिवर्तन की पहल का नेतृत्व किया। शुरुआत में, किसी को भी छोटे विकेन्द्रित प्रयासों के प्रभाव पर भरोसा नहीं था, घोर निराशा की स्थिति में, केवल चम्बल के डाकुओं की परित्यक्त पत्नियों ने काम शुरू करने के लिए तरुण भारत संघ से हाथ मिलाया। इस पहल ने बीहड़ों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक परिदृश्य को नया रूप दिया। इस पहल की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह भी रही कि लगभग 3,000 पूर्व सशस्त्र डाकुओं ने कृषि को आजीविका के रूप में फिर से स्वीकार किया। अपने-आप में यह एक सच्चा और विरल उदाहरण है कि पानी समाज के लिए शान्ति, सद्भाव, सामुदायिक चेतना और रोजगार ला सकता है। राज्य के अन्य जिलों के लोगों ने भी इस जल संकटग्रस्त क्षेत्र में पारिवारिक सम्बन्ध बनाना शुरू कर दिया था, जिसमें पहले असम, झारखण्ड और बिहार जैसे राज्यों से महिलाओं का व्यापार और अपहरण कर उन्हें शादी के लिए लाया जाता था। बच्चे अब कुपोषित नहीं हैं। बुजुर्ग रतौंधी की बीमारी से मुक्त हैं, क्योंकि अब उन्हें हरी पत्तेदार सब्जियाँ मिल गयी हैं। लोगों को अन्ततः सिलिकोसिस के व्यावसायिक खतरे से राहत मिली, जो कि मामूली दैनिक मजदूरी के लिए खदानों में लम्बे समय तक काम करने के दौरान सिलिका धूल के लम्बे समय तक सम्पर्क में रहने के कारण होता था।

आर्थिक रूप से, तरुण भारत संघ के प्रयासों से निर्मित छोटी पारम्परिक जल संरचनाएँ लागत प्रभावी थीं। इनका निर्माण 1-2 रुपये प्रति क्यूबिक मीटर भण्डारण की कम लागत पर किया गया था। क्षेत्र का इष्टतम संरचना भण्डारण लगभग 1,000-1,500 घन मीटर था जो सम्भावित रूप से वार्षिक भूजल तालिका को 20 फीट तक बढ़ा सकता था। जोहड़ पर प्रति व्यक्ति लगभग 100 रुपये का निवेश, गाँव के आर्थिक उत्पादन को प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 400 रुपये तक बढ़ाता है। ग्रामीण अब टमाटर और अंगूर जैसी नकदी फसलें उगा रहे हैं, क्योंकि अब उनके पास खेती के लिए पर्याप्त पानी है। अब सभी पशुओं के लिए साल-भर पर्याप्त चारा उपलब्ध है। पानी ने क्षेत्र में पारिस्थितिक सन्तुलन स्थापित किया, जिससे विभिन्न प्रकार के पशु और पक्षी अपने प्राकृतिक आवासों में लौट आए। अब खैर, ढोक, बरगली, ढो जैसे पेड़ों की किस्में जंगलों की जैव-विविधता को बढ़ाती हैं। शुरुआत में करौली जिले के महाराजपुरा और कोरीपुरा जैसे गाँवों ने जल संरचनाओं के निर्माण का लाभ उठाया। परिणामों को स्वीकार करते हुए, शरकपुरा, मरदेई, भूड़ खेड़ा और ब्रेटी जैसे गाँव भी तरुण भारत संघ पहल में शामिल हो गये। संगठन के स्वयंसेवकों, चमन सिंह, रणवीर सिंह, छोटेलाल मीणा, मुकेश सिंह और अन्य ने स्थानीय समुदायों के समृद्ध ज्ञान भण्डार को समझने और सामुदायिक परियोजनाओं का नेतृत्व करने के लिए जागरूकता अभियानों पर काम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी, आम सम्पत्ति संसाधनों के स्थायी प्रबन्धन के लिए सामूहिक कार्रवाई की क्षमता को उजागर किया।

यह अद्भुत काम भारतीय दर्शन से गहराई से प्रेरणा लेता है, जो पाँच तत्त्वों–सूर्य, पृथ्वी, वायु, जल और आकाश को मानव जीवन और ईश्वर–दोनों के लिए अभिन्न मानता है। यह परिवर्तन जल प्रबन्धन के स्वदेशी ज्ञान की क्षमता का विश्लेषण करने के लिए बहुमूल्य अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। स्वदेशी ज्ञान भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से सन्दर्भ विशिष्ट, समग्र और गतिशील है, सामूहिक स्मृति में निहित है, मनुष्यों और उनके पर्यावरण के बीच परस्पर सम्बन्ध के बारे में पीढ़ीगत ज्ञान को समाहित करता है। इस प्रकार छोटे जल निकाय जल निकासी के विचार के बजाय जलभृतों में पानी के कायाकल्प पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जो आधुनिक जल प्रबन्धन तकनीकों का एक प्रमुख प्रेरक है, जिसमें 'बड़े बाँध', पक्की नहरें, ट्यूबवेल आदि शामिल हैं।

हाल के वर्षों में, बढ़ते जलवायु संकट के मद्देनजर वैश्विक नीति ढाँचे में स्वदेशी ज्ञान पर नये सिरे से ध्यान केन्द्रित किया गया है। 'सतत विकास के लिए जल' पर दुशाम्बे घोषणा 2022 ने इस बात पर प्रकाश डाला कि हमें–''अधिक प्रभावी और जलवायु-लचीले जल और स्वच्छता प्रबन्धन को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी ज्ञान'' पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इसी तरह, आयीपीसीसी की छठी संश्लेषण रिपोर्ट 2023 में उल्लेख किया गया है कि कैसे स्वदेशी लोगों और स्थानीय समुदायों सहित विविध ज्ञान और साझेदारी का उपयोग करके जलवायु के अनुकूल, स्थानीय रूप से उपयुक्त और सामाजिक रूप से स्वीकार्य समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं। हालाँकि, स्वदेशी ज्ञान शब्द का प्रयोग अक्सर एक उपनाम के रूप में किया जाता है, वैश्विक जलवायु नीतियों में प्रमुख प्रतिमान अभी भी आधुनिक इंजीनियरिंग समाधानों के आस-पास केन्द्रित है, जो मौजूदा समस्याओं को हल करने के बजाय और अधिक समस्याएँ पैदा करते हैं। पर्यावरणीय संकटों का सामना करने में स्थिरता, समानता और लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए कार्रवाई योग्य अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हुए, राजस्थान की चम्बल नदी के पुनरुद्धार का मामला भारत में स्थानीय समुदायों के नेतृत्व में स्वदेशी ज्ञान-प्रथाओं पर आधारित पारिस्थितिक परिवर्तन की एक आकर्षक कहानी है। ऐसे परिणामों को दोहराने के लिए, ज्ञान उत्पादन और प्रसार की प्रक्रिया को लोकतान्त्रिक बनाने की आवश्यकता है, जिसे आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में स्वदेशी ज्ञान को एकीकृत करके प्राप्त किया जा सकता है। ■